Postal Regn. - RTK/010/2023-25
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र
जनवरी 2024 (द्वितीय)

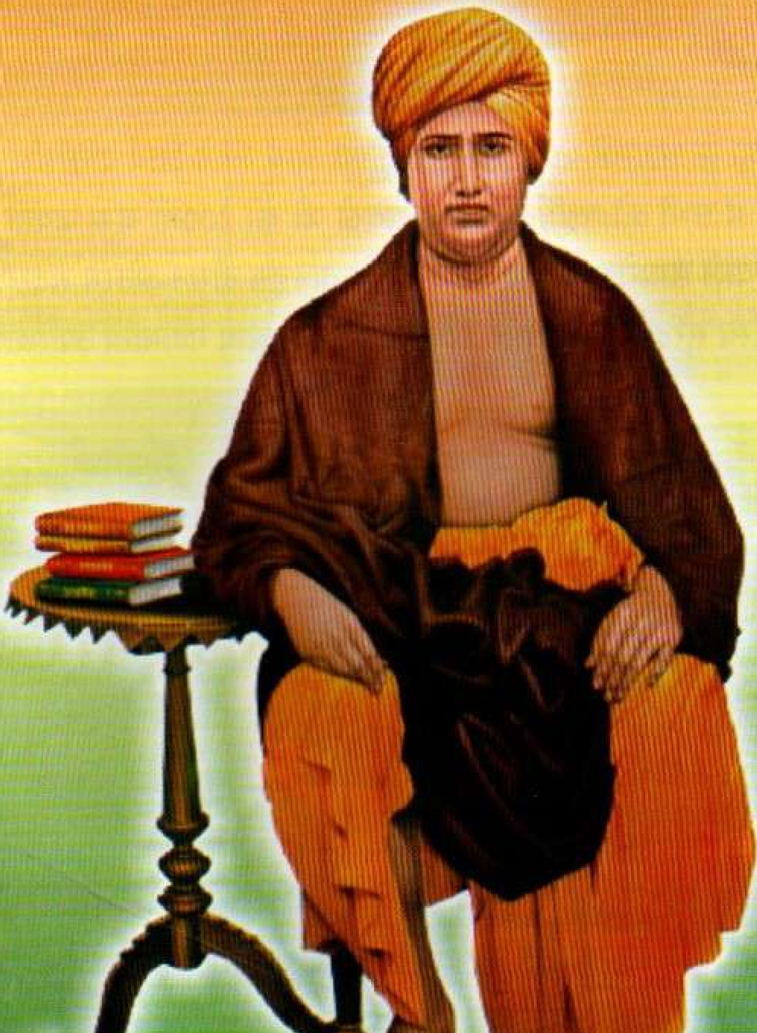

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित गुरुकुल शादीपुर यमुनानगर में सभी को महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती पर उनकी जन्मस्थली टंकारा, गुजरात में आयोजित होने वाले समारोह के लिए आमंत्रित किया। इस दौरान अंतरंग सदस्य राममेहर आर्य, कॉलेजियम सदस्य सुरेंद्र आर्य नरवाल, विशाल आर्य व अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी, श्री विशाल आर्य एवं श्री गर्व आर्य तथा अन्य गणमान्य सदस्य शामिल हुए। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ की महिमा बतलाई।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,124
विक्रम संवत् 2080
दयानन्दाब्द 200

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 19 अंक 24

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जनवरी, 2024 (द्वितीय)
16 से 30 जनवरी, 2024 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय–वेद-प्रवचन 2
2. विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी 3
3. स्वास्थ्य चर्चा–लहसुन के अनेक लाभ 4
4. सनातन शब्द की व्याख्या 5
5. ब्रह्मदर्शन 6
6. समलैंगिक विवाह को मान्यता नहीं : सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत 8
7. धर्म परिवर्तन नहीं है समस्या का समाधान 10
8. वैदिक धर्म की महत्त्वपूर्ण देन ईश्वर-जीव-प्रकृति के अनादित्व सहित सृष्टि के प्रवाह से अनादि होने का सिद्धान्त 12
9. 200वीं जयन्ती-ज्ञान-ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव 14
10. जीवन में भूलकर भी बुढ़ापा नहीं आएगा 15
11. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 16

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

–सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन–उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

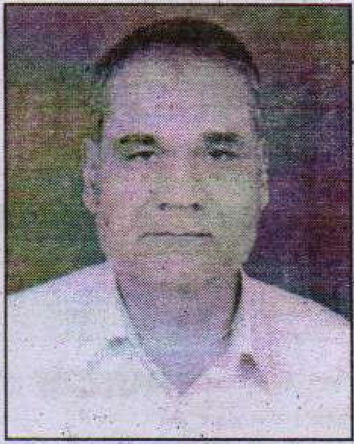

वेदमन्त्र

देवपीयुश्चरति मर्त्येषु गरगीर्णो भवत्यस्थिभूयान्।
यो ब्राह्मणं देवबन्धुं हिनस्ति न स पितृयाणमप्येति लोकम्॥

(अथर्ववेद 5.18.13)

अन्वय-(यः) मर्त्येषु देवपीयुः (सन्) चरति (सः) गरगीर्णः अस्थिभूयान् भवति। यः देवबन्धुम् ब्राह्मणम् हिनस्ति सः पितृयाणम् लोकम् न अपि-एति।

अर्थ-जो मनुष्य (मर्त्येषु) मनुष्य के मध्य (देवपीयुः) विद्वानों को सताने वाला है वह (गरगीर्णः) विष को निगलने वाले के समान (अस्थिभूयान्) केवल हाड-मांस का पिंजर रह गया है, (यः) जो (देवबन्धुम् ब्राह्मणम्) ईश्वर के प्यारे भक्त विद्वान् को (हिनस्ति) हानि पहुँचाता है (सः) वह (लोकम् पितृयाणम्) संसार में पितृयाण को (न अप्येति) प्राप्त नहीं होता अर्थात् पितरों (बुजुर्गों) की बनाई हुई परम्पराओं को सुरक्षित नहीं रखता।

व्याख्या-इस मन्त्र में दो कोटि के मनुष्यों का उल्लेख है–एक 'देवपीयु' और दूसरे 'देशबन्धु'। वस्तुतः मनुष्य जाति के दो वर्ग इन्हीं दो परस्पर-विरोधी प्रवृत्तियों तथा उनके अवान्तर भेदों के आधार पर हैं। देव का अर्थ है ईश्वर अथवा कोई अच्छी चीज जो ईश्वर के गुणों से मिलती-जुलती हो।

'प्रकाश' को हम 'देव' कह सकते हैं। दया, न्याय, वीरता, धीरता, प्रेम, सत्यता ये सब ईश्वर के गुण हैं, इसलिए दिव्य हैं। जहाँ-जहाँ ये गुण या इनका कुछ भी अंश पाया जाएगा उन चीजों को हम उन गुणों के अनुपात से 'देव' कह सकते हैं।

'देवपीयु' का अर्थ दिव्य गुणों से घृणा करने वाला और उनसे अलग रहने वाला। इसके विपरीत 'देवबन्धु' वह है जो दिव्य गुणों से प्रेम करता है। 'देवबन्धुत्व' को आप दैवी प्रवृत्तियाँ कह सकते हैं और 'देवपीयुत्व' को आसुरी जो 'सुर' नहीं वही 'असुर' हैं। उजाले का न होना ही अन्धेरा है। सुरों और असुरों की प्रवृत्तियाँ भिन्न होती हैं। सुरों का जो प्रिय है वही असुरों को अप्रिय है और जो असुरों को प्रिय है वह सुरों को अप्रिय है। कुछ ऐसे भी प्राणी हैं जिनको प्रकाश अप्रिय है, वे सूर्य की रोशनी से भागते हैं। यदि उल्लू और चमगादड़ का वश चले तो वह सूर्य के उदय होने पर ऐसी पाबन्दी लगा दें कि वह कभी चमकने ही न पाये। यदि 'उल्लू' को किसी उपास्यदेव का इष्ट हो तो उल्लू का ईश्वर सूर्य, आदित्य, प्रकाशस्वरूप आदि नामवाला न होगा। यदि उल्लू उपासना करता होगा तो शायद ऐसा न कहता होगा कि '**तमसो मा ज्योतिर्गमय**' अपितु '**ज्योतिषो मा तमो गमय**।'

मनुष्यों में बहुत-से ऐसे हैं जो 'देवबन्धु' नहीं अपितु 'देवपीयु' हैं। उन्हें दिव्य गुणों से घृणा है। चोर को चांदनी रात प्यारी नहीं होती। चोर की दृष्टि में सबसे बुरा मनुष्य वह था जिसने दीपक का आविष्कार किया और जिसने गैस या बिजली के लैम्पों का आविष्कार किया और अंधेरी अमावस्या को पूर्णिमा के रूप में परिवर्तित कर दिया। उसकी अधमता वर्णन में नहीं आ सकती।

वेदमन्त्र कहता है कि 'देवपीयुत्व' मनुष्य की निर्बलता है, सबलता नहीं, यह अवगुण है और त्यागने योग्य है। यह गुण नहीं अपितु 'गर' अर्थात् विष है। विष कभी-कभी मीठा होता है परन्तु 'गरगीर्णः' अर्थात् विष को निगल जाने वाला प्राणी शीघ्र ही मृत्यु प्राप्त हो जाता है अथवा जब तक जीवित रहता है पीड़ित रहता है। विष निगलने वाला विष को तो प्यार करता है परन्तु विष से उत्पन्न हुई बुराइयाँ उसे भी दुःख देती हैं। मनुष्य विषयों को प्रसन्द करता है विष को नहीं। बुद्धिमान् और निर्बुद्धि मनुष्य में यही भेद है कि उसे विषयों के भीतर विष दृष्टिगोचर नहीं होता। जिसने विषयों के अन्तर्निहित विष को जान लिया वह विषयों से दूर भागता है।

क्रमशः अगले अंक में......

विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी

❑ संकलन–कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

इन्द्रादि देवगण भी विष्णु को छोड़कर उत्तर काल में मांसादि के भक्षण करने वाले हो गये। महाभारत और वर्तमान पुराणों में यज्ञ में पशु मारने की घटना का जिस रूप में वर्णन मिलता है। उससे स्पष्ट है कि देवजातीय इन्द्राद्रि ही यज्ञ में पशु को मारने की प्रक्रिया को आरम्भ करने वाले थे। वेश्याओं की उत्पत्ति भी देवों की अप्सराओं के अनुकरण पर ही लोक में हुई।

एक मनुष्य योनि ही ऐसी है जहां मनुष्य सुख-दु:ख के थपेड़ों से और सत्संग से प्रेरित होकर अज्ञान को नष्ट करके धर्म के पालन में समर्थ होते हैं। शास्त्रकार मनुष्य योनि को सर्वश्रेष्ठ कहते हैं–**न हि मानुषात् श्रेष्ठतमं किंचिद्। महाभारतान्तर्गत हंसगीता** (शान्ति पर्व 299/20)।

प्रश्न 27. मरने के पश्चात् जीवात्मा के साथ क्या जाता है?

उत्तर–मरने के पश्चात् शरीर के अग्नि में भस्म होने पर जल में डूबने और खुले में पशु, पक्षियों के हवाले हो जाने पर उस मृतक शरीर के द्वारा किये हुए पुण्य कर्म ही उसके साथ जाते हैं, अत: मनुष्य को प्रयत्न पूर्वक शनै:-शनै: धर्म का संचय करना चाहिये।

यहां विदुर जी धृतराष्ट्र को धर्म संचय करने का उपदेश दे रहे हैं।

धर्मशास्त्रकारों और नीतिशास्त्रकारों ने धर्म के शनै:-शनै: संचय करने का विधान किया है। इसमें बहुत स्थानों में दृष्टान्त दिया है–'**वल्मीकमिव पुत्तिका:**' अर्थात् जैसे दीमक अपना घर शनै:-शनै: बनाती है, परन्तु कालान्तर में मिट्टी के एक-एक कण के रूप में रखा गया उसका विशाल घर बन जाता है, जो मनुश्य सहसा अपनी शक्ति का ध्यान न करके अधर्म करने में प्रवृत्त रहते हैं, वे न केवल स्वयं असमय में ही दु:ख, रोग, दारिद्रय आदि से पीड़ित हो जाते हैं, अपितु अपने आश्रित जनों को भी दु:खी करते हैं और धर्म से भ्रष्ट हो जाते हैं।

यहां विदुर जी का भाव है कि धृतराष्ट्र जी इस मनुष्य योनि में अच्छे लोगों का संग करो, अज्ञान को नष्ट करो, धर्म के पालन में समर्थ होओ और शाश्वत सुख अपवर्ग को प्राप्त करो।

प्रश्न 28. यह मनुष्य लोक कैसा है?

उत्तर–इस मनुष्य लोक के ऊपर और इससे नीचे गहन अन्धकार है, वह इन्द्रियों के ज्ञान को हरण करने वाला है।

प्रश्न 29. विदुर जी धृतराष्ट्र को उत्तम कीर्ति को प्राप्त करने का कैसा सुझाव दे रहे हैं?

उत्तर–यहाँ विदुर जी धृतराष्ट्र को यह कह रहे हैं–हे राजन्! इस वचन को सुनकर यदि पूर्णरूप से जानने में समर्थ होओगे तो मनुष्य लोक में उत्तम यश प्राप्त करोगे और इस लोक में और परलोक में कुछ भी भय नहीं रहेगा।

यहाँ विदुर जी का भाव यह है कि वह धृतराष्ट्र जी को अपना वचन मनवाने का आग्रह कर रहे हैं कि वह पाण्डवों को उनका राज्य वापिस कर दे। इस ढंग से उन्हें यश और कीर्ति की प्राप्ति होगी। इस लोक में तो सम्मान मिलेगा ही और परलोक में भी सुख प्राप्त करोगे।

प्रश्न 30. आत्मा की नदी से तुलना किस प्रकार की गई है?

उत्तर–(1) यह आत्मा नदी का रूप है।

(2) पुण्यकर्म इसमें घाट रूप है अर्थात् आत्मा पवित्र घाटों वाली नदी है।

(3) सत्य इस नदी का जल स्थानीय है अर्थात् इस नदी में सत्य रूपी जल है।

(4) धृति (धैर्यरूपी) इसके दो किनारे हैं।

(5) दया लहर स्थानीय है अर्थात् दयारूपी इसकी लहरें हैं।

(6) ऐसी आत्मा रूप नदी में स्नान करने वाला मनुष्य पुण्य कर्मा हो जाता है।

क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य-चर्चा

लहसुन के अनेक लाभ

गतांक से आगे....

नब्बे प्रतिशत बीमारियाँ पेट से होती हैं और पेट का मल ही इधर-उधर गन्दी गैस फैलाता है। लहसुन की गैस से गन्ध का गुबार निकल जाता है और आंतें तथा पेट साफ होकर शरीर निर्मल हो जाता है।

जब हृदय का रक्त उछलने लगे, नब्जें छूटने लगे, तब लहसुन की चार-पांच कलियां या उनका रस अमृत बनकर मौत के मुंह से निकाल लाता है।

लहसुन की गन्ध से न डरिये! शरीर में घाव होने पर जब उससे लहू की गन्ध उठती है तो रोगाणु खिंचकर घाव पर हमला करने को लपकते हैं। लहसुन का रस लगा देने से घाव की गन्ध मर जाती है और सेप्टिक होने का डर नहीं रहता।

लहसुन का रस मरहम पट्टी का काम करता है और जल्दी सूख जाने के कारण कपड़ों पर दाग-धब्बे नहीं लगाता। लहसुन मरहम भी है और पट्टी भी।

रामबाण औषधि है लहसुन

रोमी शीराज मुद्राराक्षस

पूरी दुनिया में सदियों से लहसुन का प्रयोग सब्जी में मसालों या फिर चटनी के रूप में होता आया है। कई घरों में तो लहसुन के बिना सब्जी बनती ही नहीं, क्योंकि इसकी वजह से सब्जी में जो खास स्वाद व खुशबू आती है वह भोजन को बेहद जायकेदार बना देती है।

वनस्पतिविदों में '**एलियम सैटाइवम**' नाम से प्रसिद्ध इस वनस्पति का अंग्रेजी नाम है '**गारलिक**'। लहसुन वास्तव में एक द्विवर्षी पौधा है जिसमें दूसरे साल फूल व बीज बनते हैं पर इसे पूरी दुनिया में एक वर्षीय पौधे के रूप में उगाया जाता है। प्याज के ही परिवार के सदस्य लहसुन की जड़ें रेशेदार, तना बेहद पतला व चिंपटा तथा पत्तियाँ गूदेदार होती हैं व इन्हीं गूदेदार चपटी व हरी पत्तियों के नीचे लहसुन की गाठ मिलती है जिसमें करीब बीस-तीस छोटी गाठें या पोथियां पतले सफेद आवरण द्वारा एक दूसरे से बंधी दिखाई पड़ती हैं। हरी पूती के चारों ओर भी सफेद शक्लनुमा आवरण मिलता है।

ऐसा नहीं है कि सदियों से लहसुन को केवल सब्जी का जायका बढ़ाने के लिए उपयोग में लाया जाता रहा है, बल्कि प्राचीन काल से ही लहसुन के औषधीय गुणों के बारे में भी लोगों को पता था। प्राचीन दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक मिस्र के विशालकाय पिण्डों का निर्माण करने वाले मजदूरों को लहसुन की ज्यादा से ज्यादा मात्रा खाने की सलाह दी जाती थी, क्योंकि उन्हें जल्दी थकान न मालूम पड़े व कड़ी धूप में भी उनके शरीर का बचाव हो सके। महान् यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेटस ने भी लहसुन को कई रोगों की अचूक दवा बताते हुए लहसुन के गुणों के बारे में विस्तार से लिखा है।

चीन में आज से पांच हजार साल पहले लहसुन उगाया व खाया जाता था और आज भी चीनी व्यंजन लहसुन के बगैर नहीं नहीं बनते। प्राचीन रोम, यूनान, फारस, मिस्र, मेसोपोटामिया में भी लहसुन का प्रयोग मसाले और औषधि दोनों के रूप में होता था। ऐसा कहा जाता है कि लहसुन को सबसे पहले चीन में उगाया गया व चीन से ही ये आज पूरी दुनियां में फैल गया है। लहसुन को उगाने के लिए खनिज पदार्थों से युक्त मिट्टी के अलावा ठण्डा मौसम चाहिए।

लहसुन का रासायनिक विश्लेषण करने पर पता चलता है कि इसमें करीब 30 प्रतिशत शर्करा, 6.3 प्रतिशत प्रोटीन व 0.1 प्रतिशत तेल होता है। लहसुन लोहा व कैल्शियम का अच्छा स्रोत होने के साथ-साथ विटामिन् सी तथा विटामिन बी जैसे थाईमीन नियासिन राइबोपलेविन आदि का भी भण्डार है। लहसुन निम्नलिखित रोगों को दूर करने के काम आता है-

1. उच्च रक्तचाप यानि हाई ब्लड प्रेशर को नियन्त्रित करने के लिए लहसुन का प्रयोग सदियों से होता आ रहा है, क्योंकि यह धमनियों की ऐंठन को दूर कर देता है। हर रोज दो या तीन पोथियाँ खाने से ही आदमी रोगमुक्त हो सकता है।

2. वायु (गैस) से पीड़ित रोगों में भी कच्चा या अचार के रूप में लहसुन खाना चाहिए। क्रमशः अगले अंक में...

सनातन शब्द की व्याख्या

❑ पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय

'सनातन' शब्द का अर्थ है **'सदा एक-सा रहने वाला'**। इसीलिये ईश्वर को भी 'सनातन' कहते हैं। सनातन धर्म का अर्थ है वह धर्म या नियम जो कभी बदलें नहीं, सदा एक से रहे। अथर्ववेद में 'सनातन' शब्द का यह अर्थ किया गया है–

सनातनमेनमाहुरताद्य स्यात् पुनर्गवः।
अहो रात्रे प्रजायते अन्यो अन्यस्य रूपयोः॥

(अथर्ववेद 10।8।23)

सनातन उसको कहते हैं जो कभी पुराना न हो सदा नया रहे। जैसे रात दिन का चक्र सदा नया रहता है। इसके कुछ उदाहरण लीजिये। जो नियम सदा एक से रहें वे सनातन हैं। जैसे दो और दो चार होते हैं, यह सनातन धर्म है, क्योंकि किसी युग में या किसी देश में यह बदल नहीं सकता। एक त्रिभुज की दो भुजायें मिलकर तीसरी भुजा से बड़ी होती है या एक त्रिभुज के तीनों कोण मिलकर दो समकोणों के बराबर होते हैं, यह सब सनातन धर्म है।

धर्म या नियम दो प्रकार के होते हैं एक सनातन और दूसरे सामयिक। सनातन बदलता नहीं। सामयिक बदलता है। जैसे जाड़े मे गर्म कपड़ा पहनना चाहिये। या ज्वर आने पर दवा खानी चाहिये। भोजन करना सनातन धर्म है, क्योंकि किसी युग में भी बिना भोजन के शरीर की रक्षा नहीं हो सकती। लेकिन दवा खाना सनातन धर्म नहीं। यह तो कभी बीमार होने पर ही काम में आता है।

धर्म के दो रूप होते हैं। एक तो मूल तत्व जो सदा एक से रहते है और दूसरी रस्मो रिवाज (Ceremonials) जो देश और काल के विचार से बदलते रहते हैं। जैसे किस समय कैसे कपड़े पहनना। यह रिवाज के अनुकूल होता है। यह धर्म का मुख्य अंग नहीं है।

बहुत से लोग मौलिक या असली धर्म और रिवाज या सामयिक धर्म को मिलाकर गड़बड़ कर देते हैं। इसलिए बहुत सा भ्रम उत्पन्न हो जाता है।

आजकल भारतवर्ष में जिसको 'सनातन धर्म' कहते हैं उसमें बहुत से रस्मो रिवाज पीछे से मिल गये हैं। जैसे शुद्ध पानी दूर तक बहते बहते गदला हो जाता है इसी प्रकार सनातन धर्म का हाल है। इसमें कुछ तो भाग सनातन है और कुछ पीछे की मिलावट है। सब को सनातन धर्म कहना भूल है।

स्वामी दयानन्द ने जिस धर्म का प्रचार किया है वह शुद्ध सनातन वैदिक धर्म है। इस प्रकार आर्यसमाज भी सनातन धर्म को मानता है। उसमें और सनातन कहलाने वालों में कुछ भेद नहीं है। सब सनातन धर्मी वेदों को मानते हैं। आर्य समाजी भी वेदों को मानते हैं। महाभारत, रामायण, मनुस्मृति, गीता आदि शास्त्रों में वेदों की महिमा पाई जाती है। यह पुस्तकें आर्यसमाज के भी आदर का पात्र हैं। इसलिये आर्यसमाज और सनातन धर्म के मूल तत्त्वों में कोई भेदभाव नहीं होना चाहिये और बुद्धिमान लोग ऐसा ही मानते हैं। कुछ निर्बुद्धि लोग रस्म-रिवाज के भेद को बढ़ाकर परस्पर द्वेष फैलाना चाहते हैं। यह ठीक नहीं। धर्म में बहुतसी बातें पीछे से मिला दी गई हैं, उनको छोड़ देना चाहिये। जैसे गंगाजल गंगोत्तरी पर शुद्ध और पवित्र होता है परन्तु हुगली नदी तक पहुँचते-पहुँचते गदला हो जाता है। उसको छानकर मिट्टी निकाल देनी चाहिये इसी प्रकार पुराने वैदिक धर्म में जो गड़बड़ पीछे से मिला दी गई है उसको भी आज शुद्ध करने की जरूरत है।

प्रेरक वचन

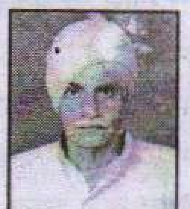

- बुराई के बदले में की हुई भलाई, बुराई को खा जाती है।
- वस्तुओं का सदुपयोग प्राणियों की सेवा में है।
- परदोष दर्शन के समान अन्य कोई दोष नहीं है
- जो दुःख से भयभीत नहीं होता, उसी से दुःख भयभीत होता है।
- गुण होते हुए भी अपना न सके-यही द्वेष है और द्वेष होते हुए भी त्याग न सके-यही राग है।
- उस सुख का त्याग कर दो, जो किसी का दुःख हो।

संकलन-भलेराम आर्य, गांव सांघी (रोहतक)

ब्रह्मदर्शन

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य, B-2, 92/7B, शालीमार नगर, जिला होशियारपुर (पंजाब) मो० 9464064398

दर्शनाचार्य का जब नया सत्र प्रारम्भ हुआ, तो वेदान्त दर्शन के पाठ्यक्रम में प्राध्यापक ब्रह्मानन्द जी ने कहा-दर्शन के अर्थ, परिभाषा के प्रसंग में जब हम वेदान्त शब्द के अर्थ, अभिप्राय, सम्बन्ध में विचार करते हैं, तो यह बात सामने आती है-

वेदान्त शब्द वेद+अन्त इन दोनों के मेल से बनता है। जहां वेद शब्द सर्वप्रसिद्ध है, वहां अन्त शब्द सिद्धान्त, तत्त्व के अर्थ में मिलता है। तभी तो महर्षि दयानन्द ने '**वेदान्तोपगतं फलम्**' मनुस्मृति 2,60 का अर्थ करते हुए लिखा है कि 'वही सब वेदान्त अर्थात् वेदों के सिद्धान्त रूप फल' सत्यार्थप्रकाश 3,50 (स्थूलाक्षर संस्करण)। अर्थात् वेद का जो मुख्य प्रतिपाद्य-ब्रह्म का जिसमें विचार है, वह वेदान्त है। '**सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति**' कठ०उप० 2,15 के अनुसार वेद का मुख्य प्रतिपाद्य ब्रह्म ही है। महर्षि दयानन्द ने भी सत्यार्थप्रकाश 3,65 में '**यस्तत्र वेद**' के अर्थ में कहा है-जिसमें सब वेदों का तात्पर्य है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'वेदविषयविचार' में भी यही सिद्ध किया है कि 'अत: परमोऽर्थो वेदानां ब्रह्मवास्ति'।

इस पर **ब्रह्मदेव** ने कहा-गुरुजी! आपने '**दर्शन-दिग्दर्शन**' में बताया था कि वेदान्त दर्शन में ब्रह्मजिज्ञासा का समाधान है। यह ब्रह्म शब्द साहित्य में अन्यत्र भी आया है। अत: ग्रन्थ के शुभारम्भ से पूर्व उस-उस विषय के ग्रन्थों में आए ब्रह्म के विवेचन से परिचित करा दें, तो हमारे लिए विषय बोध सरल हो जाएगा?

प्राध्यापक-ब्रह्मदेव! तेरी यह जिज्ञासा बहुत ही उपयुक्त है। अत: आइए! पहले इसी पर विचार करें। जैसे कि तुम सब जानते हो कि संस्कृत भाषा की दृष्टि से मूल शब्द है-ब्रह्मन्, जो कि बृह् धातु से मनिन् प्रत्यय के होने पर सिद्ध होता है। अत: ब्रह्म शब्द का तात्पर्य है-**बड़ा**।

ब्रह्मप्रकाश-गुरु जी! कल के पाठ के पश्चात् मैं पुस्तकालय गया था, वहां मैंने एक नई पुस्तक बड़ी सुन्दर जिल्द वाली देखी। जब मैंने उसको खोलकर देखा, तो वह शब्दकोष था और उसमें ब्रह्म, ब्रह्मन् शब्द के 'सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा' जगत् के मूलतत्त्व, हिरण्यगर्भ, वेद, सत्य, प्रणव, योग, तप, तत्त्व, विप्र, ऋत्विग् विशेष (ब्रह्मा) आदि अनेक अर्थ लिखे हुए थे।

प्राध्यापक-इन सभी अर्थों पर जब हम विचार करते हैं, तो एक बात स्पष्ट होती है कि जो जिस-जिस प्रकरण, क्षेत्र, विषय में बड़ा है। उसको वहाँ तदनुरूप ब्रह्म कहा गया है। जैसे कि भारतीय साहित्य के वैदिक वाङ्मय में विशेष-विशेष यज्ञों को कराने वाले चार व्यक्ति (ऋत्विक्) होते हैं-होता, उद्गाता, अध्वर्यु और ब्रह्मा। इन सबका मुखिया ब्रह्मा होता है, अन्य उसकी अनुमति से अपना-अपना कार्य करते हैं। अत एव इस बड़ेपन के कारण उसको उस प्रकरण में ब्रह्मा (=बड़ा) कहा गया है। ब्रह्मा के स्वरूप की चर्चा में मन के साथ उसका सम्बन्ध एवं तुलना दर्शायी गई है। तभी तो कहा गया है-'**मनसा एव ब्रह्मा यज्ञस्य अन्यतरं पक्षं संस्करोति**'-गोपथ ब्राह्मण 3,2; जैसे आंख, कान आदि इन्द्रियों की अपेक्षा मन इनका नियन्त्रक है। इसीलिए मनुस्मृति में कहा है-

एकादशं मनो ज्ञेयं स्वगुणेनोभयात्मकम्।
यस्मिञ्जिते जितावेतौ भवतः पञ्चकौ गणौ ॥ 2,92

यही स्थिति यज्ञ में अन्यों की अपेक्षा ब्रह्मा की होती है। इसलिए इस विश्लेषण में मूलसूत्र है-बड़ापन। संसार में जिस-जिस आधार से जहां कहीं जो कोई बड़ा है, वह वहां ब्रह्म कहलाता है। अत: अकेले या समस्त पद के रूप में जहां-जहां ब्रह्म शब्द प्रयुक्त हुआ है, वहां सर्वत्र यही भावना है।

ब्रह्मस्वरूप-गुरुजी! आपने इस विश्लेषण में ब्रह्म का जो मोटा-सा अर्थ-बड़ा बताया है। उससे मुझे हिन्दीभाषा का एक पद्यांश स्मरण आ रहा है, यदि अनुमति हो, तो मैं वह अंश अभिव्यक्त कर दूं?

प्राध्यापक-मैं भी यही चाहता हूँ कि यह जिज्ञासा की भावना प्रस्फुटित हो, क्योंकि जिज्ञासा की स्थिति में विचारचर्चा का विशेष आनन्द आता है। अत: वह पद्यांश अवश्य सुनाओ।

ब्रह्मस्वरूप-'**सबसे बड़ा रुपय्या, न कोई भैय्या, न कोई मैय्या।**'

प्राध्यापक–हां, इसी सम्बन्ध में श्री गिरधर कविराय ने भी कहा है–

साईं सब संसार में, पैसे का व्यवहार,
जब तक पैसा पास में, तब तक ताको यार।
तब तक ताको यार, यार संग ही संग डोले,
पैसा रहा न पास यार, मुख से नहीं बोले॥
कह गिरधर कविराय।

हां कवि के समय यह बात तब कितनी स्पष्ट थी, यह तो वही जाने, पर आज तो यह बात शत-प्रतिशत चरितार्थ हो रही है। आज तो उच्च पदों पर आसीनों और करोड़ों में खेलने वालों के निन्यानवे के जो घटनाक्रम सामने आ रहे हैं। उन्होंने भर्तृहरि के भावों को पूर्णत: चरितार्थ कर दिया है–

'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति' –नीति० 41

'येनैकेन विना गुणास्तृणलवप्रायाः समस्ता इमे'
–नीति० 39

'निश्चय ही जग में गुण सारे कंचन में करते हैं वास'
–गोपाल

'बिना एक जिसके गुण सारे हैं तृण के टुकड़े सम व्यर्थ'
–गोपाल

ऐसी स्थिति में ब्रह्मस्वरूप! तेरी पंक्ति यथार्थ ही है कि **'सबसे बड़ा रुपय्या'** क्योंकि आज की दुनिया और जीवन में धन ही परमब्रह्म प्रतिभासित होने लगा है। तभी तो गोपाल प्रभाकर ने लिखा है–

अर्थ की धुरी पर घूम रही है दुनिया
अर्थ के आकर्षण से बन्धे हुए
सारे लोग द्वार दरीचों से
ताकते हैं दूसरों का अर्थ
पैसा
जीवन है, संस्कृति है
आरम्भ है, इति है
सुरक्षा है, गति है
सब कुछ है पैसा
इस पैसे के खम्भे पर ही खड़े हैं
रिश्तों के मेहराब

ब्रह्मेन्द्र–गुरुजी! एक दिन मैं रुपये की आत्मकथा पढ़ रहा था, उसमें भी इसका अच्छा विवेचन था। उसको भी इस प्रसंग में प्रस्तुत कर दिया जाये तो प्रकरण की स्पष्टता के लिए उपयुक्त रहेगा?

प्राध्यापक–एक विचारक ने उस आत्मकथा को इस प्रकार लिखा है–

रुपये की आत्मकथा

हां, हां! मैं रुपया हूं, दुनिया में सबसे बड़ा, मुझ से बड़ा कोई नहीं। सभी लोग मेरे नाम की माला जपते हैं। मेरी चमक-दमक के आगे सभी लोगों की आंखें चुंधिया जाती हैं, राजा क्या, रंक क्या, सभी मुझे प्यार करते हैं। मुझे पाकर कौन व्यक्ति खुशी से फूला नहीं समाता और बिछुड़ने पर कौन सर्द आहें नहीं भरता। मेरी चमक-दमक के कारण पिता-पुत्र का, पुत्र-पिता का, भाई-भाई का शत्रु बन जाता है। मैं दुनिया में हर एक वस्तु को खरीदने की शक्ति रखता हूँ। एक भिखारी से लेकर भगवान् के चरणों तक घूमता रहता हूं। बाहर से इतनी शान होते हुए भी मेरी आन्तरिक कथा इतनी करुणाजनक है कि उसे याद करके आज भी मेरी आंखें छल-छला आती हैं।

सदियां बीत गईं, मैं लगातार पृथिवी की गोद में पड़ा रहा। एक दिन भयानक कोलाहल से मेरी नींद खुल गई। ज्यों ही मैंने दृष्टि घुमाई अनेक मजदूर कुदालियां लिए खड़े थे। थोड़ी देर के पश्चात् दनादन मेरे ऊपर चोटें पड़ने लगीं। कठिन परिश्रम के पश्चात् मजदूरों ने मुझे धरती मां की गोद से निकालकर अलग कर दिया। मेरे ऊपर कई प्रकार की तहें जमीं हुई थीं। वहां से ट्रकों में भरकर शुद्ध करने के लिए ले जाया गया। रास्ते भर की यात्रा हमें बहुत आनन्ददायक लगी। यह आनन्द शीघ्र ही गायब हो गया, जबकि हमें भट्ठियों में डाला गया। इसके पश्चात् अनेक तेजाबों से हमारी शुद्धि की गई। अब मेरा रूप काफी निखर आया था। मुझे अपने ऊपर गर्व होने लगा। लो. अब प्यार से मुझे शुद्ध चांदी कहने लगे।

मैं समझने लगा था कि मेरे दु:खों का अन्त हो गया। लेकिन यह मेरी भूल थी। अभी परीक्षा शेष थी। मुझे अन्य धातुओं सहित पिघलाकर सांचों में ढाला गया। सांचों में ढल जाने पर मेरी शक्ल गोल हो गई थी। मेरे एक ओर तीन सेर तथा दूसरी ओर मेरी पुण्यतिथि अंकित की गई। मैं प्रसन्नता से झूम उठा, अब मुझे गाड़ी की यात्रा करने को मिली।

क्रमशः अगले अंक में....

समलैंगिक विवाह को मान्यता नहीं : सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर माननीय गृहमन्त्री श्री अमित शाह जी की उपस्थिति में आर्यसमाज ने किया था समलैंगिकता पर सरकार के कदम का समर्थन

ईश्वर की अमृतवाणी वेद की समस्त ज्ञान राशि हमें जीवन जीने की कला सिखाती है। वेदों पर आधारित हमारे 16 संस्कार पग-पग पर हमें एक आदर्श और परिष्कृत जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। वेदों की दिव्य परम्पराओं पर चलकर हमारे पूर्वज महान्, बलवान्, बुद्धिमान्, रूपवान्, गुणवान् आदि विशेषताओं से युक्त अपार साहस और वीरता के धनी थे। हमारे महापुरुषों के तपोबल के सामने पाप और पापी भी थरथर कांपा करते थे। क्योंकि उनका वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित साधना पूर्ण उत्तम जीवन अद्भुत और अनुपम था।

भारत की यह तपोभूमि गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनी पर्यन्त ऋषि-मुनियों सहित मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम, योगिराज श्रीकृष्ण, नचिकेता, भीष्म पितामह, महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि महान् पुरुषों की जन्मभूमि रही है। लेकिन आजकल पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर देश की युवापीढ़ी पतन के रास्ते पर बढ़ती जा रही है। मानव जीवन के सबसे कल्याणकारी गृहस्थ आश्रम विवाह के नाम पर समाज में अलग-अलग तरह की विसंगतियां और विकृतियां पनपती जा रही हैं। जहां एक तरफ बिना विवाह के लिविंग रिलेशन में युवक-युवतियां अनैतिक और अमर्यादित तरीके से पति-पत्नी के रूप में एक साथ रह रहे हैं। जिसे हमारी न्यायपालिका ने पहले ही स्वीकृति दे रखी है। जबकि विवाह संस्कार के विषय में आर्यसमाज के संस्थापक और महान् सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार आर्यसमाज की मान्यता है कि युवक-युवतियां जातिवाद की दीवारों को तोड़कर अपने गुण-कर्म-स्वभाव के अनुरूप जीवनसाथी चुनकर विवाह करें और प्रजनन करके ज्ञान से परिपूर्ण सन्तान उत्पन्न करके राष्ट्र एवं मानव समाज की सेवा के लिए समर्पित करें। शास्त्रोक्त मतानुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को लक्ष्य में रखकर ही गृहस्थ धर्म का पालन करना उचित माना गया है।

150 वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अमानवीय कुकृत्य का विरोध करते हुए कहा था जो लड़केबाजी करते हैं वे तो सुअर और कौवे के जैसे हैं...

किन्तु आधुनिक परिवेश में युवापीढ़ी लिविंग रिलेशन में रहने से भी आगे समलैंगिक सम्बन्धों की स्वीकृति न्यायालय से प्राप्त कर चुकी है। भारत की न्याय पालिका ने 2018 में समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया था। ज्ञात हो कि 7 सितम्बर 2018 को सुप्रीम कोर्ट की पांच ज़जों की संवैधानिक पीठ ने भारतीय दण्ड संहिता की धारा 377 के हिस्से को अमान्य कर दिया था, जिससे भारत में समलैंगिकता को कानूनी बना दिया गया था। इस अमानवीय और अप्राकृतिक पशु प्रवृत्ति पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उस समय ही आदिम सत्यार्थप्रकाश के माध्यम से आपत्ति जताते हुए कहा था कि आजकल आर्यावर्त में कई एक राजा और धनाढ्य, बालकों से भी बुरा काम करते हैं, यह बड़ा आश्चर्य है कि स्त्री का काम पुरुषों से लेते हैं। महर्षि इस समलैंगिकता जैसे कुकृत्य पर रोष व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि जो लड़केबाजी करते हैं वे तो सुअर और कौवे के जैसे हैं, क्योंकि जैसे सुअर व कौवे मल से बड़ी प्रीति रखते हैं और अरुचि कभी नहीं करते। वैसे वे पुरुष भी मल जिस मार्ग से निकलता है उस मार्ग से बड़ी प्रीति रखते हैं, वे मूर्ख पाप ही कमाते हैं।

महर्षि दयानन्द ने जिस कुकृत्य को महामूर्खता और पाप की संज्ञा बहुत पहले दी थी, वह मूर्खता तो आज सारी सीमाएं तोड़कर भयानक रूप धारण करती जा रही है। यह सर्वविदित है कि लिविंग रिलेशन और समलैंगिक संबंधों से भी आगे पिछले साल दिल्ली हाईकोर्ट समेत अलग-अलग अदालतों में समलैंगिक विवाह को मान्यता देंने की

मांग को लेकर याचिकाएं दायर हुई थीं। 14 दिसम्बर को सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली हाईकोर्ट में पेंडिंग दो याचिकाओं को ट्रांसफर करने की मांग पर केंद्र से जवाब मांगा था। इन याचिकाओं में समलैंगिक विवाह को मान्यता देने के निर्देश जारी करने की मांग की गई थी। इस विषय पर केंद्र सरकार ने कहा था कि समलैंगिक विवाह को अनुमति देने न देने का अधिकार सुप्रीम कोर्ट को नहीं है। 17 अक्तूबर 2023 को सुप्रीम कोर्ट ने समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने की मांग को ठुकराते हुए अपने निर्देश में कहा कि अदालत कानून नहीं बना सकती, अदालत सिर्फ कानून की व्याख्या कर सकती है। कानून बनाना विधायिका का कार्य है। विवाह मौलिक अधिकार नहीं है, हालांकि कोर्ट ने समलैंगिक जोड़ों की जिन्दगी आसान और सुविधाजनक बनाने के लिए केन्द्र सरकार से उच्च स्तरीय समिति गठित कर खाते में नॉमिनी, सेवानिवृत्ति आदि लाभ के मुद्दों पर विचार करने को कहा है। कोर्ट ने यह भी कहा कि समलैंगिक लोगों को साथ रहने का अधिकार है और उन्हें प्रताड़ित नहीं किया जाना चाहिए। मौजूदा कानून न्याय शास्त्र और व्यक्तिगत अधिकारों की व्याख्या करने वाला यह फैसला चीफ जस्टिस डी.वाई. चन्द्रचूड, जस्टिस संजय किशन कोल, जस्टिस एस रविन्द्र भट, जस्टिस सीमा कोहली, फॉर जस्टिस नरसिम्हा की संविधान पीठ ने सुनाया। 366 पेज के इस फैसले में पांच न्यायाधीशों में से चार ने अलग-अलग फैसले दिए। सुप्रीम कोर्ट ने इस याचिका में जिसमें समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने की मांग की गई थी, सुप्रीम कोर्ट ने 11 मई को फैसला सुरक्षित रख लिया था। पीठ ने चार अलग-अलग फैसला सुनाने में करीब दो घण्टे का समय लिया। चीफ जस्टिस चन्द्रचूड ने 247 पेज के अपने फैसले में कहा कि कोई आदेश निर्देश जारी करते वक्त विधायिका के क्षेत्राधिकार का अतिक्रमण नहीं किया जा सकता। संविधान स्पष्ट रूप से शादी के मौलिक अधिकार को मान्यता नहीं देता। कानून द्वारा दी गई सामग्री के आधार पर इस संस्था को मौलिक अधिकार के दायरे से आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। हालांकि वैवाहिक रिश्ते के कई पहलू हैं जिनमें संवैधानिक मूल्य प्रतिबन्धित होते हैं। इनमें मानव गरिमा और जीवन की स्वतनत्रता का अधिकार शामिल है। जस्टिस चंद्रचूड ने कहा कि यह अदालत न तो विशेष विवाह अधिनियम की संवैधानिक वैधता को रद्द कर सकती है और न ही उसके प्रावधानों की फिर से व्याख्या कर सकती है, क्योंकि ऐसा करना नया कानून देने जैसा होगा।

उन्होंने कहा कि न्याय की समीक्षा के क्षेत्राधिकार का इस्तेमाल करते वक्त कोर्ट को विशेष तौर पर उन मामलों से दूर रहना चाहिए जो विधायिका के क्षेत्राधिकार में आते हों। इस बात की व्याख्या करते हुए जस्टिस चंद्रचूड ने समलैंगिक सम्बन्धों को शहरी और अभिजात्य वर्ग की सोच बताने की दलीलों के फैसले का जवाब दिया और कहा कि ये विचित्रता है, शहरी और अभिजात्य वर्ग की चीज नहीं है। भारत में यह प्राचीन काल से जाना जाता है और प्राकृतिक घटना है। उन्होंने कहा कि विवाह की अवधारणा कोई सार्वभौमिक अवधारणा नहीं है और न ही यह स्थिर है। अगर संविधान के अनुच्छेद 245 और 246 को सातवीं अनुसूची की तीसरी सूची में पांचवें पांचवें प्रविष्टि के साथ पढ़ा जाये तो शादी को मान्यता और उस पर कानून बनाने का अधिकार संसद व राज्य विधानसभा के पास है। आर्यसमाज सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले का स्वागत करता है और पुरुष से पुरुष और स्त्री से स्त्री के विवाह की कानूनी मांग करने वाले लोगों को यह विचार करने की सलाह देता है कि यह अप्राकृतिक और अमानवीय सम्बन्ध सफल कैसे हो सकता है। यह प्रवृत्ति तो पशुओं में भी नहीं है। विवाह का मतलब तो यही होता है कि अपने-अपने गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार स्त्री और पुरुष विवाह करके सन्तान उत्पन्न करें और उन्हें पढ़ा-लिखाकर सुयोग्य बनाएं और राष्ट्र के सभ्य नागरिक और सेवाभावी बनाकर मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें। अब प्रश्न यह उठता है कि एक पुरुष दूसरे पुरुष से अथवा एक महिला दूसरी महिला से विवाह करके क्या सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं, अगर नहीं तो फिर यह कैसा सम्बन्ध?

(साभार-आर्यसन्देश, साप्ताहिक दिनांक 30.10.23)

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार-पत्र की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।

सम्पर्क-मो० 08901387993

धर्म परिवर्तन नहीं है समस्या का समाधान

❑ राजेश आर्य, गांव आट्टा, जिला पानीपत मो० 9991291318

प्रिय पाठकवृन्द! मार्च, 2017 के अन्त में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कानून के दुरुपयोग को रोकने के लिए एस.सी.एस.टी. एक्ट में कुछ बदलाव किया गया कि 'जातिसूचक' शब्द प्रयोग करने का आरोप सिद्ध होने पर ही आरोपी पर मुकदमा चलाया जा सकेगा। इस आदेश के विरोध में देशभर में तथाकथित दलितों ने हिंसक आन्दोलन किये। मामला यद्यपि सर्वोच्च न्यायालय का था, पर सत्तापक्ष को आरक्षण विरोधी बताकर अपनी लीडरी चमकाने के लिए स्वार्थान्धों ने देश की गाडियां जला दीं। नीचता की हद तो तब हुई जब (2 अप्रैल) 'जय भीम' (अम्बेडकर) के नारे लगाने वालों ने हनुमान की मूर्ति पर थूका और राम की मूर्ति पर जूते मारे। सम्भवत: इसमें 'दलित-मुस्लिम' की संयुक्त राजनीति करने वालों का भी हाथ रहा हो, जो पेरियार के हिन्दू-विरोधी विचारों को प्रचारित कर रहे हैं।

हिन्दू की दलित जाति का लाभ उठाने वाले बिना मत परिवर्तन किये ही अपने आपको बौद्ध (अम्बेडकरवादी) कहते हैं। कभी सरकार से अपनी उल्टी-सीधी मांग मनवाने के लिए मत-परिवर्तन कर मुस्लिम या ईसाई बनने की धौंस जमाते हैं। उस समय इन्हें ईसाई या मुस्लिम बनने के बदले मिलने वाले करोड़ों रुपये ठुकराने वाला डॉ० अम्बेडकर याद नहीं आता। सोचिये, यदि ऐसे लोग हिन्दू हैं, तो राम-हनुमान् का अपमान करने वाले ये कैसे हिन्दू हैं? यदि हिन्दू नहीं हैं तो दलित होने का लाभ क्यों लेते हैं और हिन्दू आस्था के प्रतीकों का अपमान करने का इन्हें क्या हक है? यदि बौद्ध, मुस्लिम या ईसाई बनकर भी दलित ही रहे तो हिन्दू धर्म त्यागने का लाभ क्या हुआ?

पुरुषार्थचतुष्टय को मानव जीवन की सफलता मानने वाले ऋषियों ने धर्म को सर्वप्रथम रखा और कहा कि काम, भय, लोभ आदि के वश में होकर कभी धर्म का त्याग नहीं करना चाहिए। सुख-दु:ख तो अनित्य हैं, धर्म तो नित्य है। आत्मा नित्य है, इसका हेतु (शरीर) अनित्य है। अनित्य के लिए नित्य का त्याग नहीं करना चाहिए। यह सत्य है कि संस्कृत ग्रन्थों में धर्म का अर्थ सदाचरण, कर्त्तव्यपालन आदि ही है-हिन्दू-मुस्लिम, बौद्ध, ईसाई आदि नहीं। ये तो सम्प्रदाय या मत हैं, धर्म नहीं। पर जब से विदेशी इस्लाम आदि ने तलवार का डर व कुछ सुविधाओं का लालच दिखाकर भारत के निर्बल, निर्धन व अनपढ़ लोगों पर अपना मजहब थोंपना शुरू किया, तब से सम्प्रदाय धर्म की चादर ओढ़कर घूमने लगा। अर्थात् आचरण की अपेक्षा कुछ मान्यताएँ ही धर्म बन गईं। वैदिक धर्म का विकृत स्वरूप (बौद्ध, जैन, पौराणिक आदि) हिन्दू धर्म कहा जाने लगा। गौ, गंगा, गायत्री, गीता तथा देवी-देवताओं के मन्दिर-मूर्तियों के प्रति श्रद्धाभाव रखना ही हिन्दू धार्मिकता का चिह्न बन गया। इस्लाम की क्रूरता व बर्बरता ने हिन्दुत्व आस्था के इन प्रतीकों को तोड़ना व हिन्दुओं को मुहम्मद पैगम्बर के शासन (कुरान) के नीचे लाना (मुस्लिम बनाना) ही जन्नत (स्वर्ग) में 'सीट रिजर्व' करना मान लिया।

भय के उस वातावरण में भी बहुत से धर्मवीरों ने अपने धर्म की रक्षा के लिए अपने शरीर को भी तृण के समान त्याग दिया था। फिरोजशाह तुगलक ने मूर्तिपूजक ब्राह्मण को मूर्ति के साथ जीवित जलवा दिया था, पर ब्राह्मण ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया। वीर हेमू के पिता पूरणमल ने मुसलमान बनना स्वीकार नहीं किया, तो बैरम खाँ (या अकबर) ने उसके टुकड़े-टुकड़े करवा दिए, गुरु अर्जुनदेव ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया, तो जहाँगीर ने उन्हें गर्म तवे पर बैठाकर मरवा दिया। शाहजहाँ ने जुझारसिंह के बेटों उदयभानु और श्यामदेव को मुसलमान बनने से इन्कार करने पर कत्ल करवा दिया। औरंगजेब ने जाटवीर गोकुला को मुसलमान न बनने के कारण कुंल्हाड़ों से कटवा दिया, जबकि उसके पुत्र-पुत्री मुसलमान बना दिये गये। गुरु तेगबहादुर के साथ ही भाई मतिदास, सतिदास व दयाला को भी इस्लाम स्वीकार न करने के कारण तड़पाकर मारा गया। गुरु गोविन्द सिंह के बेटे जोरावरसिंह, फतेसिंह व वीर बालक हकीकतराय ने धर्म के बदले जान दे दी। शिवाजी के बेटे शम्भा जी व बन्दा वैरागी ने इस्लाम स्वीकारने से मना किया तो औरंगजेब ने उन्हें उनके अनेक साथियों के

साथ बुरी तरह तड़पाकर मरवाया व बन्दा की पत्नी जबरदस्ती मुसलमान बनाकर राजवंश की एक बेगम को गुलाम के तौर पर दे दी गई।

ये तो इतिहास के वे उदाहरण हैं, जिन्हें इतिहासकार छुपाना भी चाहें तो भी नहीं छुपा सकते। बाद में भी ऐसे हजारों ज्ञात-अज्ञात धर्मरक्षा हित बलिदान देने वाले हुए हैं। आज के कुछ तथाकथित सेकुलरों को इसमें केवल राजनीति ही दिखाई देती है, क्योंकि उनकी दृष्टि धर्म (हिन्दू) की चमक को सहन नहीं कर पाती, जैसे नेत्र के रोगी सूर्य की धूप को। उनके षड्यन्त्रों के कारण ही अपने प्रेरक इतिहास को भुलाकर स्वतन्त्र भारत के हिन्दू आज छोटी-सी समस्या आ जाने पर धर्म त्याग करने की धमकी दे देते हैं, फिर चाहे समस्या व्यक्तिगत हो, सामाजिक हो या राष्ट्रीय हो। (भूखे, नंगे, अनपढ़, गरीब वनवासी हिन्दू यदि कुछ सुविधाओं के बदले ईसाई बनते हैं, तो कोठियों में रहकर ठाठ करने वाले स्वार्थी हिन्दुओं पर लानत है)।

समस्या से जूझने वाले व्यक्ति की परेशानी मैं समझता हूँ, पर यह सत्य है कि बात-बात पर धर्म त्याग (मजहब परिवर्तन) करने की धमकी देने वाले लोगों का धर्म से कोई लगाव नहीं होता। वे तो बन्दर की शरारत पर गाय को पीटने वाली बात करते हैं। संसार में ऐसे बहुत से आस्तिक देखे जाते हैं, जो किसी कामना पूर्ति के लिए परमात्मा (इष्टदेव) से प्रार्थना करते हैं और साथ ही यह भी कह देते हैं कि मेरा काम पूरा नहीं हुआ तो तुम्हारे अस्तित्व से मेरा विश्वास उठ जाएगा। यह तो वही बात हुई जैसे कि कोई मालिक नौकर से कहे कि तुमने यह काम नहीं किया, तो तुम्हें नौकरी से निकाल दिया जाएगा। यहाँ तो परमात्मा की स्थित नौकर जैसी कर दी और धर्म को भी लोगों ने ऐसा ही समझ रखा है। आपस की लड़ाई का समाधान नहीं हुआ, तो धर्म की परिभाषा भी न जानने वाले लोग कहते हैं कि हम धर्म त्याग कर देंगे और सरकार से अन्याय (उचित-अनुचित मांग न मानी जाना) मिला, तो धर्म त्याग कर देंगे। अर्थात् दोष किसी का भी हो, दण्ड धर्म को देंगे।

वास्तव में इनके पास धर्म होता ही नहीं, ये त्याग क्या करेंगे? (एक बार कोई जन्मना ब्राह्मण कह रहे थे-मैंने दुराचार भी किया, शराब भी पी, मांस भी खाया, चोरी भी की, हत्या में भी शामिल हुआ, पर अपना धर्म नहीं छोड़ा। आज तक चौके में बैठकर ही भोजन किया है।) प्रचलित मान्यता के अनुसार यदि हिन्दू-मुस्लिम आदि ही धर्म हैं, तो सोचिये, क्या बात-बात पर धर्म त्याग करने की धमकी (या वास्तव में मत परिवर्तन) कभी किसी ईसाई या मुसलमान ने भी दी है अथवा यह लालच भरी बेशरमी हिन्दू ही दिखाते हैं और क्या यह सम्भव है कि हिन्दू धर्म को छोड़कर मुस्लिम या ईसाई बनने पर उनकी कोई समस्या नहीं रहेगी? यदि वहाँ भी कोई समस्या खड़ी हो गई, तो क्या पुनः मजहब बदलेंगे? क्या धर्म गर्मी-सर्दी के कपड़े हैं, जो अपनी सुविधा अनुसार बदलते रहोगे?

स्मरण रहे, धर्म बदलने के साथ व्यक्ति का बहुत कुछ बदल जाता है। आज जिसे वह गोमाता कहता है, कल उस माता का मांस खाने में भी उसे संकोच नहीं होगा। आज परिवार (रिश्तेदारी) की जिस लड़की को वह बहन कहता है, कल उसे पत्नी बनाने में भी संकोच नहीं करेगा। अतीत के जिन महापुरुषों (राम, कृष्ण, प्रताप, शिवाजी आदि) पर आज वह गर्वित होता है, कल उन्हीं पूर्वजों से घृणा करने लग जाएगा। कुछ तथाकथित धर्मनिरपेक्ष लोग प्रचार करते फिरते हैं कि सब मजहब एक लक्ष्य (परमात्मा) तक पहुँचने के अलग-अलग रास्ते हैं। (स्मरण रहे, रास्ते ही अलग नहीं हैं, सब सम्प्रदायों में परमात्मा के स्वरूप व स्थान की भी अलग-अलग कल्पनाएँ हैं) सुनने में तो बड़ा अच्छा लगता है-मजहब नहीं सिखाता, आपस में वैर रखना। पर सत्य यही है कि इस गीत के रचयिता सर मोहम्मद इकबाल ने जब मजहबी चश्मा पहना, तो उनकी राष्ट्रवादी भावना हिन्दुओं के प्रति घृणा में बदल गई। 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' गाने वाला कवि हिन्दुओं से अलग रहने के लिए पाकिस्तान की मांग करने लगा। सर सैयद अहमद खां का 'अलग देश' का विचार इकबाल के माध्यम से होता हुआ जिन्ना तक पहुँचा और मजहबी पागलपन ने दूसरे धर्मों (सम्प्रदायों) के लोगों को निर्दयी होकर मारा, काटा व जलाया। इकबाल के पिता हिन्दू पण्डित थे। उनको किसी मामले में फँसाकर सजा दी गई, बचने के लिए वे मुसलमान हो गये और लाहौर जा बसे। जिन्ना के पूर्वज भी हिन्दू थे, पर मजहब बदला, तो देश तक बदल गया।

क्रमशः अगले अंक में....

वैदिक धर्म की महत्त्वपूर्ण देन ईश्वर-जीव-प्रकृति के अनादित्व सहित सृष्टि के प्रवाह से अनादि होने का सिद्धान्त

❑ मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, मो०-9412985121

हम इस पृथिवी पर रहते हैं। यह पृथिवी हमारे सौरमण्डल का एक ग्रह है। ऐसे अनन्त सौर्यमण्डल इस ब्रह्माण्ड में हैं। इस सृष्टि व ब्रह्माण्ड को किसने बनाया है? इसका समुचित उत्तर विश्व के वैज्ञानिकों के पास भी नहीं है। वेद और वैदिक धर्म के अनुयायी ऋषि-मुनि व वैदिक साहित्य के अध्येता इसका उत्तर देते है। वह बताते हैं कि हमारी यह सृष्टि सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, अनादि, अनन्त, नित्य, अमर व अविनाशी परमात्मा ने बनाई व उत्पन्न की है। इस उत्तर की पुष्टि वेदाध्ययन से होती है। वेदाध्ययन सहित योगाभ्यास के अन्तर्गत समाधि अवस्था में इच्छित विषय का ध्यान करने से वह विषय योग साधक को साक्षात् उपस्थित हो जाता है। इसके द्वारा भी सृष्टि की उत्पत्ति का रहस्य व ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। यदि विश्व के वैज्ञानिक वैदिक साहित्य का अध्ययन करने सहित योगाभ्यास करें तो वह सृष्टि उत्पत्ति के यथार्थ रहस्य को जान सकते हैं। ऐसा करने पर वैज्ञानिकों की पूर्ण सन्तुष्टि हो सकती है। हमारे वैज्ञानिक वेद व वैदिक ज्ञान से अत्यन्त दूर हैं। उन्होंने बिना पढ़े व परीक्षा किये ही वेदों को त्याज्य ग्रन्थों की श्रेणी में डाल दिया है।

एक ओर वेदों के तत्त्वज्ञानी ऋषि दयानन्द वेदों को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बताते हैं दूसरी ओर हमारे वैज्ञानिक वेदों का अध्ययन करना आवश्यक नहीं समझते। यह सर्वसम्मत सिद्धान्त है कि किसी ग्रन्थ को पढ़ने में कोई बुराई नहीं होती। आश्चर्य है कि विश्व के वैज्ञानिकों ने वेदों का बिना परीक्षा किये तिरस्कार क्यों किया? यह अवश्य है कि बाइबिल पुस्तक से उन्हें ज्ञान व विज्ञान प्राप्त नहीं हुआ। इसके विपरीत उसमें उन्हें विज्ञान विरुद्ध कुछ मान्यतायें मिली। इसका यह अर्थ नहीं है कि वेद, दर्शन, उपनिषद्, आयुर्वेद एवं ज्योतिष आदि ग्रन्थों में भी ज्ञान व विज्ञान की बातें न हों। रामायण काल में पुष्पक विमान का उल्लेख आता है। जिन-जिन ग्रन्थों में विमानों का उल्लेख है वह सब ग्रन्थ ईसाई मत व विज्ञान के उद्भव एवं विकास से पूर्व के हैं। हमारे देश में सृष्टि के आरम्भ से ही विमान होते थे। उन्हीं की सहायता से हमारे देश के लोग संसार के अनेक भागों में गये और वहां-वहां बस्तियां व उपनिवेश बसाये। प्राचीन काल में महर्षि भारद्वाज ने 'वैदिक विमान शास्त्र' की रचना की थी। यह ग्रन्थ वर्तमान समय में सुलभ है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हमारे देश के एक आर्य विद्वान् श्री शिवकर बापूजी तलपडे (1864-1916) ने मुम्बई में विमान बनाया था और उसे चपाटी में अनेक लोगों की उपस्थिति में उड़ाया भी था। आधुनिक युग में इन्हें सबसे पहले वायुयान बनाने व उसे सफलतापूर्वक उड़ाने का गौरव प्राप्त है। यदि इनको आर्थिक सहायता प्राप्त होती तो यह उन्नत किस्म का वायुयान भी बना सकते थे। यह विमान तब बनाया गया था जब यूरोप के लोग विमान का नाम भी नहीं जानते थे और न ही विमान शब्द उनके शब्द कोषों में था। यह सब लिखने का तात्पर्य यही है कि प्राचीन भारत वा आर्यावर्त ज्ञान व विज्ञान से सम्पन्न था।

हमारी यह सृष्टि अनादि काल से बनी हुई नहीं है। यह ईश्वर द्वारा इस कल्प के आरम्भ में बनाई गई है। लगभग 1.96 अरब वर्ष इस सृष्टि को बने हुए हो चुके हैं। समय के साथ इसमें भी ह्रास होता है। ईश्वर ने इस समस्त ब्रह्माण्ड व इसके पिण्डों, ग्रह, उपग्रहों आदि को धारण किया हुआ है। ईश्वर का भी एक दिन व एक रात्रि होती है। ईश्वर का एक दिन 4.32 अरब वर्षों का होता है और इतनी ही रात्रि की अवधि होती है। रात्रि की अवधि को प्रलयावस्था कहा जाता है। ईश्वर के एक दिन की अवधि 4.32 अरब वर्ष में वह प्रकृति से सृष्टि को बनाकर इसका संचालन करते हैं। अवधि पूर्ण होने पर उसके द्वारा इसकी प्रलय होती है। प्रलय की अवधि में सृष्टि अपने कारण मूल प्रकृति में

विलीन रहती है। रात्रि व प्रलय की अवधि पूर्ण होने पर परमात्मा अनादि उपादान कारण सत्त्व, रज व तम गुणों वाली त्रिगुणात्मक प्रकृति से इस ब्रह्माण्ड की रचना करते हैं। रात्रि व दिन की तरह से यह सृष्टि बनती व बिगड़ती रहती है। इस सृष्टि का आरम्भ अनादि काल से चला आ रहा है। सृष्टि रचना और प्रलय का यह चक्र अनन्त काल तक चलेगा। इस बात को वैदिक सिद्धान्त के अनुसार सृष्टि को प्रवाह से अनादि, अर्थात् जिसका आरम्भ नहीं हुआ और न कभी अन्त होगा, माना जाता है। इसे समझने के लिये हमें ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति इन तीन सत्ताओं को जानना होता है। यह तीन सत्तायें इस जगत् में अनादि काल से हैं और अनन्त काल तक रहेंगी। यह चक्र कभी रुकने वाला नहीं है। सृष्टि के बाद प्रलय और प्रलय के बाद सृष्टि का होना अवश्यम्भावी है। यह सृष्टिक्रम, उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय का क्रम, अनादि काल से आरम्भ हुआ है। इसी कारण सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के सिद्धान्त को सृष्टि प्रवाह से अनादि है, कहा जाता है। विचार करने पर यह सिद्धान्त पूर्णतया तर्क एवं युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

ईश्वर, जीवात्मा एवं सृष्टि का उपादान कारण 'प्रकृति', यह तीन सत्तायें, अनादि काल से विद्यमान हैं, अतः ईश्वर अनादि काल से ही इस सृष्टि की रचना, पालन तथा प्रलय करता आ रहा है। यह रहस्य सत्य एवं यथार्थ है। यह वेदों की और हमारे ऋषियों की महानता है जिन्होंने वेदों से इस सिद्धान्त को प्राप्त किया और जनसामान्य में प्रचार किया। इस सिद्धान्त के अतिरिक्त अन्य कोई तार्किक सिद्धान्त सृष्टि रचना विषयक संसार में नहीं है। हमारी यह सृष्टि प्रथम बार कब हुई, अब तक कितनी बार हो चुकी है और कब तक होगी व होती रहेगी, इसका यही उत्तर है कि अनादि काल से इस सृष्टि की उत्पत्ति व प्रलय अनन्त बार हो चुकी है और भविष्य में भी यह क्रम चलता रहेगा। यह क्रम कभी रुकने वाला नहीं है। यह ज्ञान मनुष्य को ईश्वर के चरणों में झुका देने व समर्पण कराने में समर्थ है। इसे जानने पर ज्ञाता मनुष्य को सच्चा वैराग्य उत्पन्न होने की सम्भावना होती है। यही कारण था कि सभी ऋषि व योगी वैराग्य को प्राप्त हुए थे। वेदों से ही हमें ईश्वर, जीवात्मा एवं प्रकृति के विषय में नाना प्रकार के सभी सिद्धान्तों, मान्यताओं व तथ्यों का ज्ञान होता है। इन रहस्यों का उल्लेख वा प्रकाश हमारे दर्शन ग्रन्थों में भी हुआ है। महर्षि दयानन्द ने वेद एवं सांख्यदर्शन के आधार पर अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में सृष्टि की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला है। इस उत्पत्ति प्रक्रिया को हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि जो ब्रह्म (ईश्वर) और जीव (चेतन आत्मा) दोनों चेतनता और पालनादि गुणों से सदृश व्याप्य-व्यापक भाव से संयुक्त परस्पर मित्रतायुक्त सनातन अनादि हैं और वैसा ही अनादि मूलरूप कारण और शाखारूप कार्ययुक्त वृक्ष अर्थात् जो स्थूल होकर प्रलय में छिन्न-भिन्न हो जाता है वह तीसरा अनादि पदार्थ (प्रकृति) है। इन तीनों (ईश्वर, जीव और प्रकृति) के गुण, कर्म और स्वभाव भी अनादि हैं। इन जीव और ब्रह्म में से एक जो जीव है वह इस वृक्षरूप संसार मे पापपुण्यरूप फलों को अच्छे प्रकार भोक्ता है और दूसरा परमात्मा कर्मों के फलों को न भोक्ता हुआ चारों ओर अर्थात् भीतर बाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है। जीव से ईश्वर, ईश्वर से जीव और दोनों से प्रकृति भिन्न स्वरूप, तीनों अनादि हैं। अनादि व सनातन जीवरूप प्रजा के लिये परमात्मा ने वेद द्वारा सब विद्याओं का बोध किया है। उपनिषद् में भी एक श्लोक आता है जिसमें कहा गया है कि प्रकृति, जीव और परमात्मा तीनों अज अर्थात् जिनका जन्म (व उत्पत्ति) कभी नहीं होती और न कभी यह जन्म लेते अर्थात् ये तीन सब जगत् के कारण हैं। इन का कारण (उत्पत्तिकर्ता) कोई नहीं। इस अनादि प्रकृति (धन, दौलत व ऐश्वर्य आदि) का भोग जीव करता हुआ फंसता (बन्धन में पड़ता) है और उस में परमात्मा न फंसता और न उस का भोग करता है। ऋषि दयानन्द आगे लिखते हैं कि (सत्व) शुद्ध (रजः) मध्य (तमः) जाड्य अर्थात् जड़ता यह तीन वस्तु मिलकर जो एक संघात है उस का नाम प्रकृति है। उस से महत्तत्त्व बुद्धि, उससे अहंकार, उससे पांच तन्मात्रा सूक्ष्मभूत और दश इन्द्रियां तथा ग्यारहवां मन, पांच तन्मात्राओं से पृथिव्यादि पांच भूत, पुरुष वा जीव ये चैबीस और पच्चीसवां परमेश्वर है। इन में से प्रकृति अविकारिणी और महतत्त्व, अहंकार तथा पांच सूक्ष्म भूत प्रकृति का कार्य और इन्द्रियां मन तथा स्थूलभूतों का कारण हैं। पुरुष (ईश्वर एवं प्रकृति) न किसी की प्रकृति, न किसी का उपादान कारण और न किसी का कार्य

शेष पृष्ठ 16 पर....

200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव

10-11-12 फरवरी, 2024 : जन्मभूमि टंकारा, मौरवी (गुजरात)

आर्यसमाज मन्दिरों एवं संस्थाओं से विशेष निवेदन

समस्त आर्यसमाजें, गुरुकुल, विद्यालय एवं आर्य संस्थाएं स्मरणोत्सव की तिथियों 10-11-12 फरवरी, 2024 में अपना कोई भी बड़ा आयोजन न रखें।

आर्यसमाज मन्दिरों, संस्थाओं एवं घरों की साज-सज्जा करें

1 फरवरी से अपने आर्यसमाज मन्दिरों, संस्थाओं और घरों की विशेष सज्जा करें, बिजली की लड़ियों आदि से और सज्जा ऐसे भी करें जो दिन में दिखाई दे।

अपने नाम व फोटो के साथ होर्डिंग/बैनर लगवाएं।

समस्त आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थान, विद्यालय, गुरुकुल संस्थाओं के अधिकारीगण अपने नाम एवं फोटो के साथ अधिकाधिक होर्डिंग/बैनर क्षेत्र में लगवाएं, जिससे आर्यसमाज के साथ-साथ उनकी भी पहचान बन सके।

प्रमुख स्थानों पर पर्मानेंट होर्डिंग लगवाएं

अपने क्षेत्र के स्थानीय नेताओं, निगम पार्षदों, स्थानीय विधायक एवं सांसद के साथ स्थानीय पार्टियों के जिलाध्यक्ष, मंडलपति आदि से सम्पर्क करके उनके फोटो के साथ 200वीं जयन्ती के शुभकामना होर्डिंग/बैनर प्रमुख चौक/बाजार आदि स्थानों पर लगवाएं।

व्यक्तिगत रूप से हम क्या करें

समस्त आर्यजन अपने घरों पर ओ३म् ध्वज, 200वीं जयन्ती का शुभकामना बैनर लगाएं। जन्मोत्सव के दिन सामर्थ्यानुसार पास-पड़ोस में मिष्टान/प्रसाद वितरण करें और सोशल मीडिया पर बधाई सन्देश भेजें # दयानन्द 200 पर टैग करें।

जो टंकारा नहीं पहुँच रहे

जिन आर्यसमाजों/विद्यालयों/संस्थाओं के अधिकारी/कार्यकर्त्ता/सदस्यगण/परिवार टंकारा के आयोजन में नहीं पहुँच पा रहे। 10, 11 एवं 12 फरवरी का सम्पूर्ण आयोजन आर्यसन्देश टी.वी. पर लाईव देखें और जनसामान्य को दिखाने के लिए स्क्रीन आदि की व्यवस्था करें।

अपने समाज, संस्थान के समस्त सदस्यों, कार्यकर्त्ताओं के परिवार के साथ महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती के भव्य एवं विशाल ऐतिहासिक आयोजन के साक्षी बनें।

टंकारा पहुँचने वाले आर्य संगठन एवं आर्यजन पंजीकरण कराएं

200वीं जयन्ती-ज्ञानज्योति-पर्व-स्मरणोत्सव महासम्मेलन, टंकारा में सम्मिलित होने वाले प्रत्येक आर्य महानुभाव अनिवार्य रूप से रजिस्ट्रेशन कराकर व्यवस्थाओं में सहयोगी बनें। रजिस्ट्रेशन के लिए लॉगइन करें-

www.thearyasamaj.org

रेल टिकट वेटिंग में हो तो

जो महानुभाव रेल मार्ग से टंकारा जाना चाह रहे हैं वे अपना रेलवे आरक्षण राजकोट के लिए तुरन्त करा लें। चाहे टिकट वेटिंग मिले या कन्फर्म। **यदि टिकट वेटिंग हो तो 9311413920 पर व्हाट्सएप्प भेज दें।** अधिक जानकारी के लिए **श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी 8010293949** से सम्पर्क करें।

व्यवसायी महानुभाव एवं उद्योगपति

अपने प्रतिष्ठानों के कर्मचारियों-सहयोगियों के साथ यज्ञ करें। कर्मचारियों को मिठाई, वैदिक साहित्य की कोई पुस्तक, इनाम के रूप में 200वीं जयन्ती का सिक्का अथवा अन्य कुछ अवश्य ही वितरित करें।

व्यवसायी वर्ग यदि इस अवसर पर कोई भी किसी भी प्रकार की स्कीम दे सकें तो अवश्य दें। किसी भी सामान/खरीद पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जयन्ती से सम्बन्धित कुछ उपहार/छूट अवश्य देने का प्रयास करें।

वैदिक साहित्य प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

जो प्रकाशक अथवा पुस्तक विक्रेता अपने स्टॉल टंकारा में लगाना चाहें वे अपना स्टाल तत्काल बुक करायें। स्टालों की संख्या सीमित है। स्टाल 2100/- रुपये में उपलब्ध कराया जाएगा। बुकिंग हेतु राशि का चैक '**महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा**' भेजें। अधिक जानकारी के लिए स्टाल व्यवस्थापक **श्री संजीव आर्य (9868244958)** से सम्पर्क करें।

जीवन में भूलकर भी बुढ़ापा नहीं आएगा

आयुर्वेद के नियम–आयुर्वेद में भोजन और दैनिक जीवन में खान-पान को लेकर बहुत से ऐसे नियम हैं, अगर हम उनको अपने जीवन में उपयोग करें तो कभी भी बुढ़ापा आपके जीवन में नहीं आएगा और शरीर भी स्वस्थ रहेगा। आज के इस भाग दौड़ भरे जीवन में इंसान स्वास्थ्य और भोजन के प्रति ज्यादा जागरूक नहीं है।

अगर हम आयुर्वेद द्वारा बताए गए कुछ नियमों का पालन करें तो जीवन में कभी भी बुढ़ापे का सामना नहीं करना पड़ेगा–

पहला–इसी प्रकार से कुछ लोगों को खाना खाने के तुरंत बाद चाय अथवा कॉफी पीने की आदत होती है। भोजन के बाद चाय कॉफी पीने से पेट में एसिडिटी बढ़ती है और खाना हजम होने में दिक्कत आती है।

दूसरा–साथ ही यह भी याद रखें की भोजन करने के तुरंत बाद कोई भी फल नहीं खाना चाहिए। ऐसा करने से एसिडिटी बढ़ जाती है और गैस की शिकायत हो सकती है।

तीसरा–सबसे मुख्य बात और सबसे अधिक खतरनाक यह आदत है कि भोजन करने के बाद धूम्रपान करना। अगर आप खाना खाने के बाद धूम्रपान करते हैं तो यह एक सिगरेट का असर दस गुना बढ़ जाता है। साथ ही कैंसर होने का खतरा भी 50 फीसदी से अधिक हो जाता है।

चौथा–कुछ लोगों को खाना खाने के बाद नहाने की आदत होती है। खाने के तुरंत बाद नहाने के कारण रक्त का प्रवाह पेट की जगह हाथ और पैर की तरफ अधिक बढ़ जाता है। इस कारण पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है।

पांचवां–चिकनाई वाले खाद्य पदार्थ, तले खाद्य पदार्थ, मक्खन, मेवा तथा मिठाई खाने के तुरंत बाद पानी पीने से खांसी हो जाने की संभावना होती है जबकि गरम खाना, खीरा, ककड़ी तरबूज, खरबूजा, मूली व मकई खाने के तुरंत बाद पानी पीने से जुकाम हो जाने की संभावना होती है।

छठा–अक्सर यह देखा गया है कि, आजकल खाने के तुरंत बाद फ्रिज का ठंडा पानी या शीतल पेय पीने का प्रचलन है। भोजन के तुरंत बाद पानी या शीतल पेय पीना पेट की कई बीमारियों को जन्म देता है। इससे जठराग्नि शांत हो जाती है और आहार का पाचन ठीक से नहीं होता हैं। ठंडा पानी पीने की जगह आप खाना खाते समय थोड़ा-थोड़ा साधारण तापमान का पानी ले सकते हैं। खाना खाते समय हल्का गुनगुना पानी पीना सेहत के लिहाज से सबसे बेहतर है।

सातवाँ–भोजन करने के तुरंत बाद सोना नहीं चाहिए। खाने के बाद तुरंत सोने से खाना ऊपर की ओर आने से एसिडिटी बढ़ती है और पाचन ठीक से नहीं होता है।

आठवाँ–दोपहर को खाना खाने के बाद भी 20 मिनट के लिए बाईं ओर लेट सकते हैं और अगर शरीर में आलस्य ज्यादा है तो भी आधे घंटे से ज्यादा न सोएं। वहीं रात को खाना खाने के बाद बाहर सैर करने जाएं (कम से कम 500 कदम) और रात को खाना खाने के कम से कम 2 घंटे बाद ही सोएं।

सब सुखी और निरोगी रहे।

ओ३म्

आदरणीय धर्मप्रेमी महानुभावो!

आपको प्रसन्नता पूर्वक सूचित किया जाता है कि **वैदिक संस्कृति धर्मार्थ रक्षा न्यास** (स्थान-आर्यसमाज रूपनगर न्यास) रूपनगर रोहतक का दूसरा वार्षिकोत्सव माघ कृष्ण चतुर्दशी से माघ शुक्ल द्वितीया सम्वत् 2080 तदनुसार **9 फरवरी से 11 फरवरी, 2024** तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है, जिसमें यज्ञ, भजन एवं उपदेश का कार्यक्रम होगा।

आमन्त्रित विद्वान्–

आचार्य रणवीर जी शास्त्री, वैदिक प्रवक्ता (सहारनपुर, उ०प्र०) एवं **श्री प्रताप वैदिक,** आर्य भजनोपदेशक (सहारनपुर, उ०प्र०)।

कार्यक्रम

शुक्रवार, 9 फरवरी से रविवार, 11 फरवरी, 2024

यज्ञ, भजन एवं उपदेश–प्रात: 7.30 से 11.00 बजे तक

यज्ञ एवं भजन–सायं 3.30 से 5.00 बजे तक

भजन एवं प्रवचन–रात्रि 7.30 से 10.00 बजे तक

अत: अपने परिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित इस कार्यक्रम में पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढावें एवं धर्मलाभ उठाएं।

–सत्यकाम, आर्यसमाज रूपनगर, रोहतक

सम्पर्कसूत्र–9466749992/3, 8529990100, 9896391574

सोया जगत् जगाओ तुम

स्वामी दयानन्द के शिष्यो, वैदिक धर्म निभाओ तुम।
करो वेदप्रचार जगत् में, सोया जगत् जगाओ तुम॥
याद करो ऋषि दयानन्द को, सचमुच संत निराला था।
ईश्वर भक्त सदाचारी था, देशभक्त मतवाला था।
अम्बा शंकर का सुत प्यारा, माँ यशुदा ने पाला था।
किया वेदप्रचार जगत् में, ऋषि ने किया कसाला था।
मानो तुम उपकार संत के, जीवन सफल बनाओ तुम।
करो वेदप्रचार जगत् में, सोया जगत् जगाओ तुम॥
यवन और ईसाई पापी, जुल्म रात-दिन ढाते थे।
वेद गडरियों के गाने हैं, जनता को बहकाते थे।
शंखासुर ले गया श्रुतियाँ, पौराणिक चिल्लाते थे।
पशु-पक्षी नरबलि यज्ञों में पाखण्डी दिलवाते थे।
लाखों विधवायें रोती थीं, समझो, आगे आओ तुम।
करो वेदप्रचार जगत् में, सोया जगत् जगाओ तुम॥
नारी को पैरों की जूती, यहाँ बताया जाता था।
स्त्रीशूद्रो नाधीयताम् का, पाठ पढ़ाया जाता था।
निर्बलों विकलों निर्दोषों को यहाँ सताया जाता था।
देश-भक्त वीरों को फाँसी पर लटकाया जाता था।
भारत का इतिहास पढ़ो तुम, व्यर्थ न समय गंवाओ तुम।
करो वेदप्रचार जगत् में, सोया जगत् जगाओ तुम॥
स्वामी दयानन्द ने सबको, ईश्वर पुत्र बताया था।
पढ़ने का अधिकार सभी को, ऋषिवर ने समझाया था।
गऊओं की सेवा करने का, जग में पाठ पढ़ाया था।
कर्म प्रधान जगत् में केवल, योगी ने दर्शाया था।
जाति-पाति का ऊँच-नीच का, घातक रोग मिटाओ तुम।
करो वेदप्रचार जगत् में, सोया जगत् जगाओ तुम॥
त्यागी और तपस्वी था ऋषि, लालच में ना आया था।
ईंटें खाईं पत्थर खाए, कभी नहीं घबराया था।
देशभक्त बलवान बनो, युवकों को पाठ पढ़ाया था।
विष के प्याले पी-पीकर, वेदामृत हमें पिलाया था।
तुम कायर कमजोर गए बन, कुछ तो अब शर्माओ तुम।
करो वेदप्रचार जगत् में, सोया जगत् जगाओ तुम॥
ढोंगी पाखण्डी लोगों से, समझौता करना छोड़ो।
वैदिक पथ पर चलो आर्यो, दुष्टों से डरना छोड़ो।
लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, राजपाल से वीर बनो।
ऊधमसिंह, बिस्मिल, शेखर-से, देशभक्त रणधीर बनो।
'नन्दलाल निर्भय' बन करके, जग में धूम मचाओ तुम।
करो वेदप्रचार जगत् में, सोया जगत् जगाओ तुम॥

-पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक, आर्यसदन
बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

वैदिक धर्म की महत्त्वपूर्ण.... पृष्ठ 13 का शेष...

है। उपनिषद् में यह भी बताया गया है कि यह जगत सृष्टि की उत्पत्ति के पूर्व सत्-असत्, आत्मा और ब्रह्मरूप था। पश्चात् वही परमात्मा अपनी इच्छा से बहुरूप (कार्य जगत् तथा प्राणी जगत् के अनेक व्यवहारों वाला) हो गया। ऋषि दयानन्द ने सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के विषय में सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में विस्तार से लिखा है। वहां उन्होंने सभी प्रकार की शंकाओं को उपस्थित कर उनका समाधान भी किया है। अत: सृष्टि उत्पत्ति विषयक वैदिक दृष्टिकोण व सिद्धान्त को जानने के लिये सभी जिज्ञासुओं को इस समुल्लास को अवश्य पढ़ना चाहिये।

वेदों व वैदिक साहित्य में सृष्टि की रचना विषयक युक्ति एवं तर्क के आधार पर यथार्थ स्थिति को प्रस्तुत किया गया है। संसार के मत-मतान्तरों के ग्रन्थ अल्पज्ञ मनुष्यों के बनाये हुए हैं। उनमें ज्ञान की वैसी पूर्णता नहीं है जैसी वेद एवं ऋषियों द्वारा रचित (प्रक्षेपरहित) साहित्य में है। ईश्वर, जीवात्मा एवं प्रकृति का जो सत्य एवं वैज्ञानिक स्वरूप वैदिक ग्रन्थों में है वह भी संसार के किसी मत-पंथ-सम्प्रदाय के ग्रन्थ में नहीं है। अत: वेदों का ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है जो इन ग्रन्थों में उपलब्ध ज्ञान की परीक्षा से सिद्ध होता है। हमें वेदों का अध्ययन करने के साथ इसका प्रचार भी करना चाहिये। इसी से संसार में सत्य व असत्य का बोध हो सकता है और मनुष्य अपने जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष को जानकर उसकी प्राप्ति में प्रवृत्त हो सकते हैं।

सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से सम्बन्धित समस्त आर्यसमाजों एवं संस्थाओं के अधिकारियों को अवगत कराया जाता है कि जो भी आर्यसमाज एवं संस्था सभा के PAN नम्बर तथा 80G का प्रयोग कर रही हैं, वह सभा कार्यालय को सूचित करें। ऐसा न करने की अवस्था में वह आर्यसमाज तथा संस्था हानि के लिए स्वयं जिम्मेवार होंगी। - उमेद शर्मा, सभामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी मन्त्री एवं आर्य वीर दल हरयाणा के संचालक श्री उमेद सिंह शर्मा ने आर्य वीर दल हरयाणा (भिवानी) के कार्यकर्त्ताओं के साथ आर्य वीर दल हरयाणा का स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी मन्त्री एवं आर्य वीर दल हरयाणा के संचालक श्री उमेद सिंह शर्मा ने आर्य वीर दल हरयाणा (भिवानी) के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता को सम्मानित करते हुए।

आर्य वीर दल हरयाणा (भिवानी) के कार्यकर्त्ताओं द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी मन्त्री एवं आर्य वीर दल हरयाणा के संचालक श्री उमेद सिंह शर्मा का स्वागत करते हुए।

श्री ....

पता ....

....

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा